दिनांक :- 14-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- दो

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- संगम काल स्त्रोत

पुरातात्विक स्त्रोत

① अशोक के अभिलेख ② खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख।

③ आगस्तम का मंदिर (मुजिरिश)

④ अरिकमेडु की खुदाई से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री

⑤ कुटछ युक्त एंव कच्छविहीन कब्रें

⑥ दसवीं सदी के प्रारंभ में पाए गए एक पांड्य अभिलेख

इसमें पांड्य शासकों की अनेक उपलब्धियों की चर्चा

Scanned with CamScanner

की गई है। यहाँ इन्हे मदुरा मे अनेक संगम स्थापित हेराक्लीज की पुत्री ने की थी।

② पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी

③ प्लिनी एवं स्ट्रैबो का विवरण ④ संगम साहित्य

संगम साहित्य :-

सुदूर दक्षिण के जनजीवन पर संगम साहित्य से ही प्रकाश पड़ता है। संगम का अर्थ होता है तमिल कवियो संघ अथवा सम्मेलन जो संभवतः किसी सामंत अथवा राजा के आश्रय मे आयोजित होता था। मदुरा मंडल अथवा सम्मेलन में तमिल कवियो के सम्मेलन की चर्चा है। इसका प्रथम उल्लेख इरय नार अगप्पोरुल (8वी) सदी के विवरण से प्राप्त होता है। तमिल परंपरा से तीन साहित्यिक परिषदों का विवरण मिलता है जो पांड्य राजाओ की राजधानी मे आयोजित की गई थी। संगम साहित्य की लिपि ब्राह्मी मे है।

Scanned with CamScanner

मदुरै की जैन तथा बौद्ध पहाड़ियों में उत्कीर्ण आद्य तमिल भी ब्राह्मी लिपि में ही लेखबद्ध है।

प्रथम संगम
स्थान : तेन मदुरा   अध्यक्ष :- आचार्य अगस्त्य

अगस्त्य ऋषि को ही दक्षिण भारत में आर्य संस्कृति के प्रसार का श्रेय दिया गया है।

तमिल भाषा में प्रथम ग्रंथ के प्रणेता भी इन्हे ही माना गया है माना जाता है कि प्रथम संगम में देवताओं तथा ऋषियों ने भी भाग लिया था जिसकी कुल संख्या 549 थी।

इस संगम को 89 शासकों का संरक्षण प्राप्त हुआ था।

इस संगम में संकलित प्रमुख ग्रंथ थे: अकुकतियम मदु नरै आदि परंतु उपरोक्त सभी रचनाएं विनष्ट हो गई हैं।

दूसरा संगम
स्थान :- कवत्तापुरम या कपाटपुरम

अध्यक्ष : अगस्त्य और तोल्काप्पियार

Scanned with CamScanner

इस संगम को ~~पन~~ पांड्य शासको का संरक्षण प्राप्त
हुआ था इस संगम मे तमिल भाषा के पव विद्वानो
ने भाग लिया था
इस संगम के दौरान जिन ग्रंथो की रचना हुई थी
उनमें अकत्तियम, मापुरानम व्यालमल तथा तोलकका
पियम उल्लेखनीय है।
इस संगम की भी सभी रचनाएं नष्ट हो गई, मात्र
तोल्कापियम नामक व्याकरण ग्रंथ ही सुरक्षित रह सका
तीसरा संगम – स्थान : मदुरै (उत्तरी)
अध्यक्ष :- नक्कीरर
इस संगम को भी पव पांड्य शासको का संरक्षण प्राप्त
हुआ, तथा इस संगम मे पव विद्वानो ने भाग लिया
इनमें इरैयनार, कपिलर एवं उग्रपांड्य शासक जैसे
विद्वान शामिल थे।
तीसरे संगम में रचित साहित्य 8 संग्रह ग्रंथो मे
संकलित थे, इन्हे एटुत्तोगई कहा जाता है।

इन आठ ग्रंथो के नाम निम्नांकित है।

① नणिणनै : प्रेम पर ४०० छोटी कविताएँ

② कुरून्थोकै : प्रेम पर ४०० कविताएँ

③ ऐनगुरूनुरू : किलार द्वारा रचित प्रेम पर ५०० कविताएँ

④ पदित्तुप्पत्तु :- चेर राजाओं की प्रशंसा में आठ कविताएँ

⑤ परिपादल :- देवताओं की प्रशंसा में २० कविताएँ

⑥ करितोगई : १५० कविताएँ

⑦ अहनानुरू :- रुद्रश्रामण द्वारा रचित ४०० कविताएँ

⑧ पुरूनानुरू : राजा की स्तुति में ४०० कविताएँ

उपर्युक्त आठ ग्रंथ एंव दस ग्राम्य गीत मेलकन्कु के नाम से जाने जाते है।

मेलकन्कु के दस ग्राम्य गीत मेलकन्कु में संकलित है।

संपूर्ण संग्रह में १०२ नामोल्लेख के अतिरिक्त ४७३ कवियों को २२७९ रचनाएँ है। कविताओं की लम्बाई ४-५ पंक्तियों से लेकर ८०० पंक्तियों तक है।

इसके रचनाकार के नाम भी दिये गए हैं और इनमें रचना के अवसर के बारे में भी सूचना दी गई है। हालाँकि 8 वीं सदी में लिखि गई संगम की तमिल टीकाओं में कहा गया है कि तीन संगम 9990 वर्ष तक चले। इनमें 8598 कवियों ने भाग लिया और 197 पांड्य शासक इनके संरक्षक थे समूचे संगम साहित्य को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा गया है। आख्यानात्मक और उपदेशात्मक। आख्यानात्म ग्रंथ मेलकन्कु तथा उपदेशात्मक ग्रंथ किलकन्कु अर्थात अठारह लघु ग्रंथ कहलाते हैं। किलकन्कु साहित्यनीति युक्त है इनमें तिरुकुराल एंव नलदियार महत्तवपूर्ण है। तिरूक्कुराल को तमिल साहित्य का बाइबिल कहा जाता है। इस भाग में आर्य प्रभाव बहुत अधिक मात्रा में दिखाई देता है इनमें जैन प्रभाव की प्रधानता व्याप्त है

संगम साहित्य की रचनाओं के वर्गीकरण के अन्य आधार भी है।

(1) साहित्य का विभाजन अगम तथा पुरम में हुआ है।

अगम में अंतरंग यानि प्रेम संबंधी कविता का संग्रह है

तो पुरम में बाह्यम अथवा राजाओं की प्रशंसा से संबंधित कविता है।

(2) साहित्य का क्षेत्रिय विभाजन

संपूर्ण संगम साहित्य को पाँच तिणै क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

(1) कुरुंजी (पर्वत-वन)

विवाह से पूर्व के प्रेम तथा पशुओं के आक्रमण से संबंधित कविता

अर्थव्यवस्था का आधार - आखेट तथा संग्रहण

जाति समुदाय - करवर तथा वेलत

(II) पल्लै (पलई):

भौगोलिक लक्षण : निर्जन स्थल, शुष्क क्षेत्र

इसमें प्रेमियों के दीर्घकालीन विरह तथा ग्रामीण पक्ष को नष्ट करने वाली कविता का संग्रह है।

Scanned with CamScanner